महात्मा गाँधी विश्र्वविद्यालय, कोट्टयम, केरल की पीएच.डी की उपाधि केलिए प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में आधुनिकता बोध

हिन्दी साहित्य में सन् 1950 ई० के आसपास एक बदलाव, एक नयापन दिखाई पड़ता है जो आधुनिक परिवेश की देन है । आधुनिकता का अभिप्राय है प्रत्येक विष्यवस्तु में नयापन। आधुनिकता का बोघ आधुनिक युग की उपज है। आज़ादी के बाद नयी स्थितियाँ उभरकर आयी जिनका प्रभाव मानव जीवन के हर हिस्से पर दिखाई देने लगा । आधुनिकता बोघ के कारण सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों में आविर्भूत यह परिवर्तन साहित्य में भी प्रस्तुत हुआ। हिन्दी में आधुनिकता का प्रादुर्भाव भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काल से हुआ और प्रेमचंद युग में यह स्वरूप और अधिक विकसित हुआ। सामाजिक वास्तविकता के प्रति सजगता, कथानक से हटकर मानव चरित्र का विश्लेषण, भाषा का जनवादी रूप आदि आधुनिक होने के लक्षण हैं।

नई कहानी का लक्ष्य नये भाव बोध या आधुनिकता बोघ पर आधारित जीवन के यथार्थ अनुभव का चित्रण माना जाता है। नई कहानियाँ परिवर्तित होते सामाजिक जीवन यथार्थ और मानवीय संवेदना की भरपूर पहचान करा सकी हैं। इस यथार्थ के संप्रेषण में निर्मल वर्मा जैसी सृजनात्मक प्रतिभा की अपनी अलग प्रासंगिकता है । क्योंकि उन्होंने आधुनिक मनुष्य की त्रासद स्थिति के बहुआयामी

संदर्भों को अपनी रचना में उभारने का प्रयत्न किया है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में आधुनिकता बोध के कई स्वरूप दिखाई देते हैं। इसमें सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक, सांस्कृतिक संदर्भों में बदलते व्यक्ति की मानसिकता, द्वन्द्व, तनाव, ऊब,यातना एवं संघर्ष के विभिन्न आयामों की सार्थक खोज-बीन तथा पडताल की गयी है। पारिवारिक संबंधों में बदलाव, नैतिक और धार्मिक मूल्यों का विघटन और व्यक्तिवादिता, रिश्तों का टूटना, आर्थिक परिस्थितियों में बदलाव, अजनबीपन और अकेलेपन का एहसास, आधुनिक जीवन का खोखलापन, औद्योगीकरण का प्रभाव, संत्रास, एवं असुरक्षाबोध सर्वत्र छाये हुए दिखाई देते हैं। सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों में व्याप्त यह परिवर्तन स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में भी दिखाई पड़ते हैं।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद और अज्ञेय के बाद यदि लीक से हटकर कोई नाम उभरता है तो वह निर्मल वर्मा का है, जिन्होंने आधुनिक हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा में महत्पूर्ण पड़ाव तय किए हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में निर्मल वर्मा के कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। उन्होनें कहानी, उपन्यास, डायरी, आलोचनात्मक निबंध, यात्रा-वृत्तान्त आदि वि़भिन्न विधाओं में रचनाएँ कीं । अपनी बात कहने के लिए निर्मल वर्मा के पास समर्थ वैचारिक क्षमता और सशक्त भाषा है। उनकी रचनाओं की महत्पूर्ण विशेषता यह है कि आधुनिक जीवन की बदलती हुई रूप-रेखा को परिनिष्ठित रूप में और सूक्ष्मांकनों के साथ प्रस्तुत किए गये हैं।

उन्होंने हिन्दी में पहली बार मानव अस्तित्व के मूल में स्थित प्रश्न पाठकों के सामने उठाए हैं ।

नई कहानी आंदोलन के आरंभकर्ताओं में निर्मल वर्मा पहले कहानीकार रहे। निर्मल वर्मा ने आधुनिकता और भौतिकता से पीड़ित समकालीन मानव की आंतरिक समस्याओं को अपनी कहानियों में सशक्त रूप से चित्रित किया है । व्यक्ति के अकेलापन, अजनबीपन, आत्मनिर्वासन की त्रासदियों की संघर्षशीलता आदि समस्याओं को अपनी कहानियों में मूल विषय के रूप में चुनने के कारण निर्मल वर्मा नए कहानीकारों के बीच अलग से पहचाने जाते हैं। निर्मल वर्मा की शिल्पगत विशेषता यह है कि वे अपनी कहानियों में वर्तमान की अपेक्षा अतीत का विलक्षण प्रयोग करते आये हैं। वे वर्तमान को प्रायः अतीत बनाकर ही चित्रित करते हैं।

निर्मल वर्मा जी चिंतक, विचारक और कथाशिल्पी थे। चिंतक और रचनाकार की भूमिका में निर्मल वर्मा ने भारतीय होने का अर्थ गहराई से समझा था। निर्मल वर्मा भारत की स्मृति-परंपरा को नए संदर्भों के साथ जोड़ने वाले गंभीर विचारक हैं । वे सर्जनात्मक लेखकों के बीच एक बैद्धिक थे, भारत और पश्चिम दोनों की नैतिकता, आधुनिकता से आक्रांत सभ्यता के संकट आदि पर गहराई से विचार करते थे। भारतीय संस्कृति और सौन्दर्य भावना को उकेरने तथा सहेजने में जो सफलता निर्मल जी को मिली है, वह अन्य समकालीन कथा-चिन्तकों में नहीं

दिखती। अस्तित्ववादी दर्शन का व्यापक प्रभाव निर्मल वर्मा की रचनाओं में देखा जा सकता है ।

प्रवासी हिन्दी साहित्य में निर्मल वर्मा सबसे सशक्त हस्ताक्षर हैं। निर्मल वर्मा नयी कहानी के कदाचित् सबसे विवादस्पद कहानीकार हैं। निर्मल वर्मा के कथा साहित्य और उपन्यास में जीवन का व्यापक अनुभव अभिव्यक्त हुआ है, जिसमें एक ओर भारतीय परिवेश की अभिव्यक्ति है तो दूसरी ओर विदेशी परिवेश भी पूरी संवेदनशीलता से चित्रित हुआ है। उन्होंने मध्यवर्गीय आकांक्षाओं और मोहभंग को अपनी केन्द्रीय रचना-वस्तु मानकर विकसित किया । प्रवासी जीवन ने निर्मल वर्मा पर अस्तित्ववादी विचारधारा का गहरा प्रभाव पैदा किया है।

निर्मल वर्मा की कहानियों की संवेदना आधुनिक भारतीय समाज की संवेदना ही है। उनका कथा-साहित्य आधुनिकता बोध से ओतप्रोत है। उनकी कहानी प्राचीन परंपराओं का विरोध करती है। निर्मल वर्मा का समग्र कथा साहित्य आधुनिक जीवन का जीवंत दस्तावेज़ है। आधुनिक युग की विवशता, हार, लाचारी, चीख, व्यर्थता, भेद-भाव, बेगानापन, अनिश्चितता, घुटन, बेरोज़गारी, निराशा, टूटते संबंध,भय, सेक्स आदि विभिन्न आयाम उनके कथा साहित्य में परिलक्षित होते हैं। निर्मलजी की कहानियाँ मानव मन की जटिलताओं, समाज की जटिलताओं और मानवीय रिश्तों के रहस्य की कहानियाँ हैं। आधुनिक जीवन में व्याप्त मूल्यों का विघटन, संयुक्त परिवारक की टूटन, संबंधों में उदासीनता, तीसरे

व्यक्ति के आगमन से दुखमय दांपत्य जीवन, जीवन की विकृतियाँ, नैतिकता के बंधनों का त्याग, नए उभरते मानवीय संबंध आदि आधुनिक प्रवृत्तियाँ निर्मल वर्मा की कहानियों में देखने को मिलती हैं ।

समकालीन मनुष्य का भयावह अकेलापन निर्मल वर्मा के लेखन के केंद्र में रहा है। निर्मल वर्मा ने मनुष्य की इस आधुनिकता से उत्पन्न समस्या को अलग-अलग कोणों से देखा, परखा है। निर्मल जी ने विसंगतियों से भरे संसार में अकेले अभिशप्त जीते मनुष्य का बडा अच्छा चित्रण किया है। भीड में अकेलेपन का अनुभव करनेवाले और बेरोज़गारी समस्या से आहत नवयुवकों की आवाज़ उनकी अधिकांश कहानियों में सुनाई पडती है । आधुनिकता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है अस्तित्व की तलाश । निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से इसी अस्तित्व की तलाश का सफल चित्रण किया है। उनकी कहानियों में अस्तित्ववाद की कई स्थितियों का अध्ययन कर सकते हैं। अस्तित्ववादी दर्शन के कारण व्यर्थता-बोध, अर्थहीनता, स्वातंत्र्यबोध, शून्यता-बोध, यथार्थ-बोध, मृत्यु-भीति आदि पहलू भी इनकी कहानियों में देखने को मिलते हैं।

निर्मल जी ने अपनी कहानियों में आधुनिक जीवन के तनावों और विसंगतियों के बीच रहनेवाले युवकों के मानसिक द्वन्द्वों की ओर संकेत करने का प्रयास किया है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में जो महानगरीय अजनबीपन और अकेलापन दिखाई दिया इसका प्रमुख कारण संयुक्त परिवार की टूटन है। सारे संबंधों से

विच्छिन्न व्यक्ति अधिकाधिक अकेला और अजनबी होता चला गया है। उनकी कहानियों में मुख्यतः यह स्थिति प्रवासी जीवन की देन है। उनकी कहानियाँ मूलतः संभ्रांत परिवारों के व्यक्तियों की संवेदनाओं को, उनके आधुनिक परिवेश में अंकित करती हैं। पारिवारिक और सामाजिक जीवन के कटे हुए व्यक्ति की जीवनगाथा ही निर्मल वर्मा की कहानियों का कथ्य रहा है।

आज के युग में आधुनिक मध्यवर्गीय लोगों के परिवारों में, संबंधों में उदासीनता आ गयी है। इसी कारण संबंधों में विघटन भी आया है। निर्मल वर्मा की कथाओं में मानवीय संबंधों की गहरी बुनावट मिलती है। निर्मलजी ने अपने कथा साहित्य में टूटते परिवारों एवं संबंधों का तथा परिवारों में संबंधों के प्रति उदासीनता और रिशतों में आए अजनबीपन का चित्रण किया है। निर्मल वर्मा जिस कथा संसार की सृष्टि करते हैं, वहाँ पर पारिवारिक टूटन, घुटन,अलगाव, उदासीनता तथा तनाव के ताने-बाने गहराते हैं। उनके सभी उपन्यासों और कहानियों में दांपत्य संबंधों में टूटन ही दिखाई देती है।

प्रेम को निर्मल वर्मा ने बिल्कुल एक नये दृष्टिकोण से देखा है और प्रेम के विविध रूपों को अपने कथा साहित्य में दर्शाया है। निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रेम पर आधारित स्त्री-पुरुष संबंधों का यथार्थ भी विशेष रूप से दिखाई देता है। निर्मल वर्मा ने नर-नारी संबंधों के बदलाव की आधुनिक मनुष्य की स्थिति और नियति को अधिकतर यौन संबंधों की सक्रियता से संबद्ध करके दिखाया हैं। उनके

स्त्री-पुरुष प्रेम संबंधों के चित्रण में सिग्मंड फ्रायड की मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव दृष्टिगत है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में कई संदर्भ ऐसे हैं जहाँ मृत्यु का भय ठीक सामने उपस्थित होता है। मृत्यु के आमने-सामने खड़े व्यक्ति की मानसिकता, आत्म-संघर्ष आदि का चित्रण निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों में बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है । निश्चय ही यह मृत्यु-बोध आधुनिकता के बोध की गवाही देता है । निर्मल वर्मा की कहानियों में मृत्यु का बोध जितना तीव्र है उतना ही तीव्र है जिजीविषा का भाव । यह जिजीविषा मनुष्य को जटिल परिस्थितियों के बीच जीने की प्रेरणा देती है। अपनी प्रबल जिजीविषा के कारण ही विपरीत परिस्थतियों में भी निर्मल वर्मा के पात्र जीने की ललक उत्पन्न करते हैं। यही जिजीविषा निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रबल रूप से चित्रित हुई है ।

निर्मल वर्मा की कहानियों में महानगरीय जीवन का मार्मिक वर्णन मिलता है। उनकी कहानियों में महानगर में जीनेवाले व्यक्ति की मानसिकता, समस्याएँ जैसे अपरिचय, कृत्रिमता, व्यर्थता-बोध, बेरोज़गारी, उन्मुक्त यौन संबंध और पालतूपन आदि को पूरी सफलता से चित्रित किया है। नगरीकरण ने जीवन को खोखला बना दिया है, और जीवन को बहुत तेज़ और संघर्षपूर्ण बना दिया है।निर्मल वर्मा की कहानियों में इन सारे लक्षणों का बड़ा सफल चित्रण हुआ है ।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में व्यक्ति स्वातंत्र्य पर अधिक बल दिया गया

है। नयी कहानी के लगभग सभी पात्र प्राचीन जीवन मूल्यों, आदर्श एवं आस्थाओं का घोर विरोध करते हैं और अपने कर्म एवं संघर्ष के बल पर नये मूल्यों को ग्रहण करते दिखलाई पड़ते हैं। आज का मनुष्य दूसरों की शर्तों पर नहीं जीना चाहता, वह अपनी शर्तों पर जीता है। निर्मल वर्मा व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं निजता पर बल देनेवाले लेखक हैं ।

अतः कहा जा सकता है कि आज के युग में व्याप्त आधुनिकता बोध के प्रायः सभी लक्षण निर्मल वर्मा के संपूर्ण कथा-साहित्य में विद्यमान हैं । इसलिए उन्की रचनाओं पर जितना भी अध्ययन करे, फिर भी अनेक अछूते एवं अनदेखे पहलू अवश्य शेष रह जाते हैं । अतः निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में व्याप्त आधुनिकता बोध को पूर्णतः समझना तथा उनकी रचनाओं की थाह को पकड पाना आसान कार्य नही हैं । इस क्षेत्र में मेरा यह शोध प्रबन्ध- 'निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में आधुनिकता बोध' एक विनम्र प्रयास है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है । प्रथम अध्याय का शिर्षक है - 'निर्मल वर्मा का व्याक्तित्व-निर्माण और रचना संसार'। इस अध्याय में निर्मल वर्मा के व्याक्ति परिचय में उनके जीवन परिवेश की ओर प्रकाश डालने के साथ विभिन्न दृष्टिकोणों को स्पष्ट करने का परिश्रम हुआ है । इसके साथ निर्मल वर्मा की सर्जनात्मक मनोभूमिका का निर्माण, उनके लेखन में इतिहास और स्मृति के प्रभाव पर विवेचन किया गया है । निर्मल वर्मा का रचना संसार

काफी विपुल है । उनके द्वारा लिखित कहानियाँ, निबंध, यात्रा सस्मरण, उपन्यास, अनुवाद, डायरी, आदि विधाओं का भी इस अध्याय में परिचय दिया गया है। उनके साहित्यिक-पदार्पण के विवरण के साथ उनकी कहानियों और उपन्यासों के कथातन्तुओं की ओर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है । साथ ही उन्हें प्राप्त सम्मान तथा पुरस्कार का भी परिचय दिया गया है ।

इस शोध प्रबन्ध का दूसरा अध्याय है -'जीवन परिवेश और सर्जनात्मकता'। किसी के भी व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार, परिवेश, विचारधारा और शिक्षा आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है । इस अध्याय में कथाकार निर्मल वर्मा के लिखने का प्रेरणा स्रोत, उनकी रचनात्मक ऊर्जा के स्रोत, भारतीय जीवन सन्दर्भ से जुडाव, प्रवासी जीवन और सर्जनात्मकता, निर्मल वर्मा की साहित्य संबधी अवधारणाएँ आदि पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साहित्य-सृष्टि में महत्वपूर्ण बहुत सारी बातें निर्मल वर्मा को अपने परिवार से ही मिलीं । निर्मल वर्मा अनेक भारतीय लेखकों, पाश्चात्य लेखकों और विचारधाराओं से प्रभावित रहे, इसका भी जिक्र इस अध्याय में हुआ है।

इस शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय है -'आधुनिकता बोध की अवधारणा'। हिन्दी साहित्य के परिवर्तित सदंर्भों में आधुनिकता की प्रक्रिया और प्रकृति को समझने के लिए आधुनिकता बोध को समझने की जरूरत है। इस अध्याय के प्रथम चरण में आधुनिकता के अर्थ और प्रकृति को परिभाषित किया गया है । आधुनिकता

बोध का अर्थ है जीवन की नवीन चेतना का बोध । इस संदर्भ में आधुनिकता बोध के विविध आयामों पर विचार किया गया है। दूसरे चरण में आधुनिकता और आधुनिकता बोध के अंतर का विश्लेषण करने के साथ आधुनिकता बोध के कारक तत्वों पर अध्ययन करने का प्रयास हुआ है । तीसरे चरण में विश्व स्तर पर आधुनिकता बोध के आगमन पर दृष्टिपात किया गया है। चौथे चरण में द्वितीय विश्व महायुद्ध के सन्दर्भ में आधुनिकता के परिवर्तित भाव-बोध पर प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है । पाँचवे चरण में जीवन के विविध आयामों से जुडता आधुनिकता बोध का विश्लेषण किया गया है जैसे, परंपरा, विद्रोह, समसामयिकता, यथार्थ, आधुनिकीकरण, विज्ञान, समकालीनता आदि। अंतिम चरण में साहित्य के वातायन से आधुनिकताबोध के अध्ययन करने का प्रयास हुआ है ।

चौथा अध्याय है - 'निर्मल वर्मा के कहानियों में आधुनिकता बोध,' जो इस शोध प्रबंध का मुख्य अध्याय है। निर्मल वर्मा हिंदी के ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में मानव मन का ऐसा सूक्ष्म चित्र खीचा हैं जहाँ भय, स्वार्थ, तनाव, अकेलापन, अलगाव और असुरक्षा बोध साफ नज़र आते हैं। इस अध्याय में निर्मल वर्मा की कहानियों को आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास हुआ है । आधुनिकता बोध की प्रक्रिया जैसे- पारिवारिक संबधों की टूटन, अकेलापन, अजनबीपन, अस्तित्वबोध, प्रेम संबध, मृत्यु बोध, जिजीविषा, माहानगरीय परिवेश, वैयक्तिक स्वातंत्रय, आदि पहलू निर्मल वर्मा की कहानियों के मुख्य विषय रहे हैं । इन पहलुओं को केद्र में रख कर निर्मल वर्मा की कहानियों का विस्तार से

विवेचन करने का प्रयास किया गया है ।

पाँचवें अध्याय का शीर्षक है - 'निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता बोध'। यह इस शोध प्रबंध का दूसरा महत्वपूर्ण अध्याय है । इस अध्याय में निर्मल वर्मा के उपन्यासों का विश्लेषण आधुनिकता बोध के संदर्भ में किया गया है । इस संदर्भ में उनके उपन्यासों में आधुनिकता बोध के विभिन्न अयामों को खोजने का प्रयास हुआ है । निर्मल वर्मा के अधिकतर उपन्यास यूरोपीय आधुनिकता में खोए भारतीय मनुष्य की मुक्ति की गाथा है। उन्होंने उपन्यास के माध्यम से शहरी ज़िंदगी की जटिलता और वास्तविकता को पकड़ने का प्रयास किया है।

शोध प्रबंध के अंत में 'उपसंहार' दिया गया है, जिसमें निर्मल वर्मा के व्यक्तित्व और सृजनात्मक पक्ष के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है। निर्मल वर्मा की रचनाओं का मुख्य स्वर आधुनिकता बोध ही है । उनके पूरे कथा-साहित्य के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों को उपसंहार में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है । निर्मल वर्मा की रचनाएँ आधुनिक मानवीय समाज की वास्तविकताओं जैसे अकेलापन, अजनबीपन, अस्तित्वबोध, प्रेम संबध, मृत्यु-बोध, जिजीविषा, माहानगरीय परिवेश, वैयक्तिक स्वातंत्र्य आदि के प्रति पाठकों को जागरूक करने में सफल रहा है।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में मानवीय संबधों की नई व्याख्या का भाव स्पष्ट है । इस प्रक्रार निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य का अध्ययन-विश्लेषण के

उपरातं यह स्पष्ट होता है कि आज का समाज और विचार बोध एक नई सस्कृति का निर्माण कर रहे हैं । निश्चय ही निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में जो जीवन दर्शन अभिव्यक्त हुआ है वह वर्नमान सदर्भ में भी प्रासंगिक लगता है। अतः निस्संदेह निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य को वर्तमान युग की स्पन्दनमयी ज़िन्दगी के सप्राण पन्ने कहना सार्थक एवं समीचीन है ।

✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲